पाठ-1

इस्लाम का भारत में आगमन

इस्लाम का उदय अरब देश में हुआ और धीरे-धीरे पूरे विश्व में इसका प्रसार हो गया। सातवीं शताब्दी में भारत पर अरबों के आक्रमण के बाद भारतीय लोग इस्लाम से परिचित हुए और धीरे-धीरे इस्लाम भारतीय संस्कृति का अंग बन गया।

इस्लाम धर्म की शुरुआत

यह अरब देश की बात है। वहाँ के मक्का नामक शहर में सन् 570 ई0 में हजरत मोहम्मद का जन्म हुआ था। उस समय अरब में अनेक छोटे-छोटे कबीले थे जो लगातार एक दूसरे से लड़ते रहते थे। ये लोग बहुत सारे देवी- देवताओं की पूजा करते थे। हजरत मोहम्मद इन कबीलों के बीच आपसी सौहार्द एवं भाईचारा बढ़ाने के लिए यह सन्देश देने लगे कि ईश्वर एक है। एक मात्र अल्लाह की सीधे और सरल तरीके से प्रार्थना करनी चाहिए। मोहम्मद साहब ने कहा कि अल्लाह को मानने वाले सब लोग बराबर हैं और एक हैं।

प्रारम्भ में मक्का शहर के कई लोगों ने मोहम्मद साहब की बातों का विरोध किया था। यहाँ तक कि मोहम्मद साहब को मक्का छोड़कर 622 ई0 में दूसरे शहर मदीना जाना पड़ा था। इनका यह जाना 'हिजरत' कहा जाता है। इसी समय से मुसलमानों का हिजरी सम्वत् प्रारम्भ होता है। धीरे-धीरे अरब के सारे कबीले मोहम्मद साहब की बातें मानने

लगे। इस्लाम धर्म अरब देश से प्रारम्भ होकर दुनिया के कई देशों में फैला। मोहम्मद साहब की मृत्यु 632 ई0 में हुई।

इस्लाम के तीन बुनियादी सिद्धान्त हैं-समता, समानता तथा बंधुत्व। इस्लाम धर्म में लोग मानते हैं- अल्लाह एक है और वे उसके बन्दे हैं तथा हज़रत मोहम्मद, अल्लाह का पैग़ाम (संदेश) लाने वाले पैगम्बर हैं।

काबा (मक्का)

मोहम्मद साहब की शिक्षाएँ

मोहम्मद साहब ने इस्लाम धर्म के मानने वालों के लिए जीवन में निम्न पाँच सिद्धान्त निर्धारित किए-

1. कलमा- अल्लाह एक है और मोहम्मद उसके पैगम्बर हैं।

2. नमाज़ - प्रतिदिन पाँच बार नमाज़ पढ़ना।

3. रमज़ान- रमजान के पवित्र महीने में रोजा (व्रत) रखना।

4. ज़कात - अपनी उपार्जित आय का 2.5 प्रतिशत गरीबों को सहायतार्थ देना।

5. हज- पूरे जीवन में एक बार मक्का की तीर्थयात्रा करना।

मोहम्मद साहब के देहावसान के बाद अरब में खलीफाओं का प्रभुत्व स्थापित हो गया। खलीफा पैगम्बर के उत्तराधिकारी के रूप में मुस्लिम जगत के धार्मिक गुरू तथा राजनीतिक प्रशासक होते थे। इन्होंने अपना साम्राज्य अरब देश, सीरिया, इराक, ईरान, मिस्र, उत्तरी अफ्रीका तथा स्पेन तक फैलाया।

भारत में इस्लाम धर्म

भारत में इस्लाम धर्म समय-समय पर कई तरह से आया व फैला जैसे-अरबों द्वारा भारत पर आक्रमण से, अरब व्यापारियों के माध्यम से, ईरानी शरणार्थियों और सूफी सन्तों के आने से। भारत में इस्लाम धर्म के प्रसार के प्रमुख कारण निम्नलिखित थे-

1. अरबों का आक्रमण-भारत पर अरबों का पहला आक्रमण खलीफा उमर के समय 636 ई0 में थाना (पश्चिमी तट) पर हुआ। यह आक्रमण सफल नहीं हुआ। इस आक्रमण से भारतीय लोग सबसे पहले इस्लाम धर्म मानने वालों के सम्पर्क में आए। इसके बाद समय-समय पर भारत पर अरबों का आक्रमण होता रहा। इसमें पूर्ण सफलता मोहम्मद बिन कासिम को प्राप्त हुई। मोहम्मद बिन कासिम ने

712 ई0 में सिंध के शासक राजा दाहिर को पराजित कर सिंध पर अरबों का राज्य स्थापित किया।

2. कई अरब व्यापारी जो इस्लाम धर्म को मानते थे, भारत के पश्चिमी तट पर व्यापार करने आते थे। वहाँ के बंदरगाहों में वे छोटी- छोटी बस्तियाँ बनाकर बसे। राजाओं ने उन्हें बसने में मदद की। उन्हें अपने घर, गोदाम बनाने के लिए जमीन दी। इन व्यापारियों के प्रभाव से आस-पास के लोग इस्लाम धर्म से परिचित हुए।

3.भारत के उत्तरी हिस्सों में इस्लाम धर्म की जानकारी ईरानी शरणार्थियों के द्वारा आयी। सन् 900 के लगभग ईरान देश पर तुर्क कबीले हमले कर रहे थे। इन हमलों से बचने के लिए कई ईरानी लोग भारत आये। उनमें कई लोग कारीगर थे और कई लोग सन्त थे। कुछ सिपाही भी आये जो राय-राणाओं की सेनाओं में शामिल हो गये। ये ईरानी लोग मुसलमान थे। इनके सम्पर्क में आकर बहुत से लोगों को इस्लाम के बारे में जानकारी मिली।

4.सन् 1190 के बाद भारत में तुर्क लोगों ने अपना राज्य स्थापित कर लिया था। इस समय तक तुर्क लोग भी इस्लाम धर्म मानने लगे थे। तुर्कों के साथ बड़ी संख्या में ईरानी, अफगानी, खुरासानी लोग भी भारत आकर बसे।

5.सन् 1100 से 1500 के बीच कई ऐसे सन्त हुए जैसे-कबीर, नानक, तुकाराम, रामानंद, जिन्होंने साधारण भाषा में दोहे और गीत गाये, जो ईश्वर के प्रति भक्ति भाव से भरे थे। इन्हीं भक्त सन्तों की तरह कई मुसलमान सन्त भी थे जो सूफी सन्त कहलाते थे। अजमेर के ख्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती, पंजाब के बाबा फरीद, दिल्ली के निजामुद्दीन औलिया बहुत जाने-माने सूफी सन्त थे।

सूफी सन्तों के विचार भक्त सन्तों के विचार से मिलते जुलते थे। सूफियों ने इस बात पर जोर दिया कि सच्चे दिल से अल्लाह को प्रेम करना और अपने बुरे कामों पर पश्चाताप करना अल्लाह को पाने का सही तरीका है। इन सन्तांे के विचारों की मदद से हिन्दू और

मुसलमान लोगों ने एक-दूसरे के धर्म की समान बातें समझीं। लोगों के बीच यह विचार बैठने लगा कि एक ही ईश्वर है- उसे अल्लाह, ईश्वर, परमेश्वर, भगवान जैसे नामांे से जाना जाता है।

मिलने-जुलने के फायदे

जब दो अलग-अलग संस्कृति के लोग आपस में मिलते हैं तो एक-दूसरे से बहुत कुछ सीखते हैं। जब अरबी लोग भारत आए तो वे अपने साथ वहाँ (अरब) के रीति-रिवाज व धर्म (इस्लाम) लाए। अरबों तथा भारतीयों ने एक-दूसरे से बहुत कुछ सीखा इससे इनके रहन-सहन तथा जीवन में बदलाव आया। अरबों ने कई भारतीयों ग्रन्थों का अरबी भाषा में अनुवाद किया।

भारतीयों ने अरबों से सीखा

- कागज बनाना
- चरखे से सूत कातना
- सिले हुए कपड़े-सलवार, कमीज
- खान-पान- कचैड़ी, समोसा बनाना

अरबों ने भारतीयों से सीखा

- हिन्दी संख्या से अरबी संख्या बनाना
- संख्याओं की गणना करना
- ज्योतिष
- गणित
- शतरंज का खेल
- भारतीय संगीत
- चिकित्सा शास्त्र (आयुर्वेद का ज्ञान)

तुर्क आक्रमण के समय भारत

उत्तर भारत में इस्लाम के आगमन के समय कोई शक्तिशाली शासक नहीं था। ग्यारहवीं शताब्दी के प्रारम्भ में भारतवर्ष सौ से भी अधिक छोटी राजनीतिक इकाइयों अथवा राज्यों में विभक्त हो चुका था जिन पर कई छोटे-बड़े राजा और सामन्त शासन करते थे। इनमें अधिकांशतः राजपूत थे। अतः इस युग को 'राजपूत युग' कहा गया है। इन छोटे छोटे राज्यों के शासक व्यक्तिगत महत्वाकांक्षा की पूर्ति हेतु राज्य-विस्तार में संलग्न हो गए। इसके परिणामस्वरूप राजनीतिक अव्यवस्था और अधिक बढ़ गई। ऐसे में केन्द्रीय सत्ता का ह्रास स्वाभाविक था।

समाज जाति-पाँति तथा भेद-भाव के बन्धन पर आधारित था। इस समय जाति-व्यवस्था में और अधिक कठोरता आ गई थी। भारतीय समाज अपने खान-पान एवं आचार-विचार को श्रेष्ठ समझता था। अतः दूसरे देशों में क्या हो रहा है ? उससे परिचित होने का न प्रयास किया गया और न ही लाभ उठाया गया।

हिन्दी संख्या

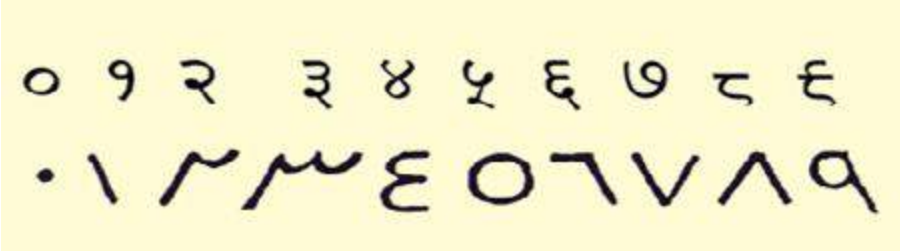

अरबी संख्या

तुर्क आक्रमण

उन दिनों भारत में कई छोटे-बड़े राजा और सामन्त थे। उत्तर भारत में चौहान, तोमर, गहड़वाल, चन्देल, चालुक्य जैसे राजपूत वंशों के राज्य थे। इसी समय तुर्कों ने, जिनका राज्य ईरान, अफगानिस्तान व तुर्किस्तान में था, भारत में अपना राज्य फैलाने के लिए आक्रमण प्रारम्भ किया।

महमूद गजनवी का भारत पर आक्रमण

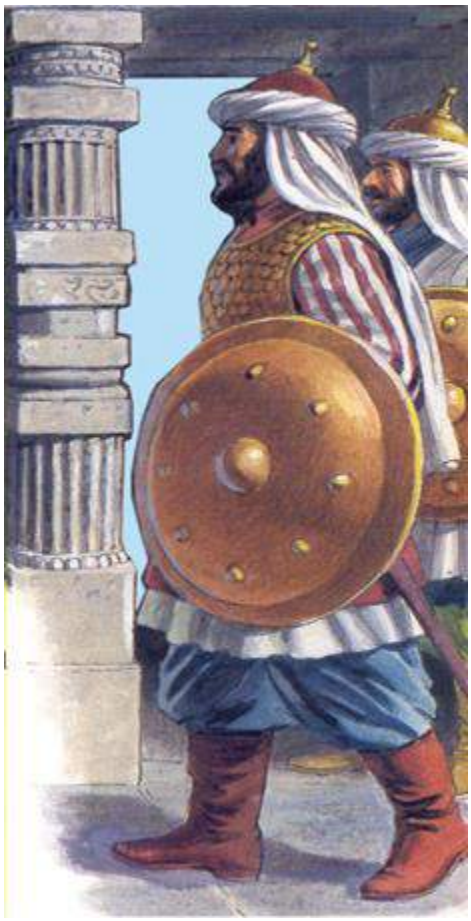

महमूद गजनवी

तुर्क लोगों द्वारा पहला बड़ा हमला तब हुआ जब गजनी राज्य (अफगानिस्तान) के महमूद गज़नवी नाम के तुर्क राजा ने भारत पर हमला किया, पर वह भारत में राज्य नहीं करना चाहता था। उसकी नज़रें ईरान, अफगानिस्तान व खुरासान के क्षेत्र में ही दूसरे तुर्क राजाओं को हराकर अपने राज्य गजनी को बढ़ाने में लगी थी।

जब महमूद गज़नवी भारत में राज्य नहीं करना चाहता था तो फिर वह भारत क्यों आया ? इसलिए कि वह अपनी सेना बनाने के लिए धन जुटाने की कोशिश कर रहा था। इस

कोशिश में उसने सन् 1000 से सन् 1025 तक 17 बार विभिन्न राजपूत राज्यों पर आक्रमण किया। उसने कई राजाओं को हराकर उनके धन पर कब्ज़ा किया। उन मंदिरों और बौद्ध मठों को तोड़ा व लूटा, जिनमें बहुत

धन दौलत इकट्ठी हुई थी। इसमें 1025 ई0 में सोमनाथ मन्दिर का आक्रमण सबसे प्रसिद्ध है।

सोमनाथ मन्दिर गुजरात के सौराष्ट्र क्षेत्र के वेरावल में स्थित है। ये बारह ज्योतिर्लिंगों में से एक है। इस मन्दिर को कई बार आक्रमणकारियों ने नुकसान पहुँचाया।

आधुनिक मन्दिर का निर्माण सरदार वल्लभ भाई पटेल के प्रयास से हुआ। भारत के प्रथम राष्ट्रपति डॉ0 राजेन्द्र प्रसाद के हाथों 11 मई 1951 को यहाँ ज्योतिर्लिंग की स्थापना की गई।

अल्बरुनी की दृष्टि में भारत

अल्बरुनी मध्य एशिया का प्रसिद्ध विद्वान था। इनका मूल नाम अबुरैहान मोहम्मद बिन अहमद था। इनका जन्म 973 ई0 में खीवा में हुआ। अल्बरुनी महमूद गज़नवी का समकालीन था और वह भारत आया था। उसने यहाँ संस्कृत भाषा, भारतीय दर्शन और ज्योतिष शास्त्र का अध्ययन किया। अल्बरुनी ने अपनी पुस्तक तहकीक-ए-हिन्द में ग्यारहवीं शताब्दी में भारत के सामाजिक एवं सांस्कृतिक जीवन (समाज, रीति-रिवाज, तौर-तरीके आदि) पर विस्तार से जानकारी दी है, जिसके मुख्य अंश निम्नलिखित हैं-

- विदेशियों के प्रति यहाँ के लोगों के विचार बहुत संकुचित थे। विदेशियों के तौर-तरीके, पहनावे के तरीके, खानपान उन्हें नहीं पसंद थे। इन्हीं कारणों से वे उन्हें म्लेच्छ कहते थे।

- भारत के लोग अपने-अपने पारम्परिक व्यवसाय को ही अपनाते थे।
- सभी को भोजन अलग थाल में परोसा जाता था। वे एक थाल में नहीं खाते थे।
- भारत में लोग दैनिक कार्यों को करने में शगुन को महत्त्वपूर्ण मानते थे।
- हिन्दुओं में ईश्वर के प्रति सम्मान और विश्वास है। उनका मानना है कि- ईश्वर एक है, अनादि है, अनन्त है, स्वतंत्र है, सर्वशक्तिमान है, सर्वज्ञ है, सबसे बुद्धिमान है, जीवंत है, जीवनदाता है, शासक है।
- भारतीय खगोल एवं खगोल विज्ञान व्यवस्था पाँच सिद्धान्त के रूप में दी गई है। पृथ्वी और ग्रह, उनका आकार और घूमना, सूर्य और चन्द्रग्रहण, अक्षांश और देशांतर, इनके पर्यवेक्षण के उपकरण तथा अन्य खगोलीय तथ्यों की भारतीय अवधारणाएँ हैं।
- भारतीय गणितज्ञ तथा खगोलशास्त्री योग्य हैं लेकिन उन्होंने इस ज्ञान के निष्कर्ष पर ध्यान नहीं दिया। पृथ्वी, तत्व, अंतरिक्ष तथा समय और इसके विभाजन में पुराणों में वर्णित पारम्परिक विचारों को ही भारतीयों ने मान्यता दी।

मुहम्मद गौरी

मुहम्मद गोरी अफगानिस्तान के गोर नामक स्थान का था। उसने गजनी पर 1173-74 ई0 में अधिकार कर लिया। भारत पर उसने पहला आक्रमण मुल्तान पर किया। मुल्तान पर विजय करने के बाद गोरी ने गुजरात पर आक्रमण किया। यहाँ उसे चालुक्य वंश के राजा मूलराज द्वितीय ने अपनी साहसी विध्ावा माँ नायिका देवी के नेतृत्व में आबू पहाड़ के निकट पराजित किया। यह भारत में उसकी पहली पराजय थी। इस पराजय के बाद गोरी ने अपने आक्रमण का मार्ग बदला। उसने पंजाब पर आक्रमण प्रारम्भ किया। 1190 ई0 तक उसने सम्पूर्ण पंजाब को जीत लिया।

मुहम्मद गौरी

पृथ्वीराज चौहान

पंजाब जीतने के बाद उसके राज्य की सीमाएँ दिल्ली और अजमेर के शासक पृथ्वीराज तृतीय (पृथ्वीराज चैहान) के राज्य से मिलने लगी।

पृथ्वीराज चैहान-जिन दिनों मुहम्मद गोरी भारत पर आक्रमण कर रहा था, उस समय चैहान (चाहमान) वंश के राजा पृथ्वीराज चैहान भी अपने राज्य का विस्तार करने में लगे हुए थे। पृथ्वीराज चैहान एक वीर, साहसी एवं योग्य सेना नायक था। उन्होंने कई राजपूत शासकों को पराजित किया इनमें चन्देल शासक, 'पर्मादिदेव' भी था। 'पर्मादिदेव' के आल्हा-ऊदल नाम के लोक प्रसिद्ध सेना नायकों ने भीषण युद्ध किया, पर वे युद्ध में मारे गए। भटिण्डा पर मुहम्मद गोरी के अधिकार कर लेने के बाद पृथ्वीराज चैहान तथा मुहम्मद गोरी के मध्य संघर्ष की स्थिति बन गई।

पृथ्वीराज चौहान

तराइन का युद्ध

मुहम्मद गोरी तथा पृथ्वीराज चैहान के मध्य पहला युद्ध तराइन (हरियाणा के करनाल जिले में) के मैदान (1191 ई0) में हुआ। इस युद्ध में मुहम्मद गोरी की हार हुई और वह जान बचाकर भागा।

मुहम्मद गोरी एक साल तक शान्त रहा। इस दौरान उसने अपनी सेना को शक्तिशाली बनाया। 1192 ई0 में उसने पुनः पृथ्वीराज चैहान पर आक्रमण किया। दोनों के बीच एक बार पुनः तराइन के मैदान में भीषण युद्ध हुआ। इस बार पृथ्वीराज चैहान की हार हुई। पृथ्वीराज चैहान को बन्दी बना लिया गया।

पृथ्वीराज चैहान को पराजित करने के बाद मुहम्मद गोरी ने 1194 ई0 में कन्नौज के शासक जयचन्द को चंदावार नामक स्थान पर पराजित किया। मुहम्मद गोरी एवं उसके सेनानायकों ने ग्वालियर, बयाना, बिहारा एवं बंगाल पर विजय प्राप्त की। मुहम्मद गोरी के मृत्यु के समय (1206 ई0) तक लगभग सम्पूर्ण उत्तर भारत उसके अधीन आ चुका था।

तुर्कों की जीत के कारण

इतिहासकार राजपूतों की हार व तुर्कों की जीत के अलग-अलग कारण बताते हैं। इतिहासकारों के बीच इस बात को लेकर सहमति नहीं है फिर भी मुख्य रूप से तुर्कों की जीत के निम्नलिखित कारण हैं-

- राजपूत राजाओं में एकता का अभाव।
- राजपूतों द्वारा पुरानी युद्ध प्रणाली व शस्त्रों का प्रयोग करना।
- तुर्क सेना के पास अच्छी नस्ल के घोड़े और फुर्तीले घुड़सवारों का होना।
- तुर्क सैनिकों का कुशल तीरंदाज होना।
- भारतीय समाज में व्याप्त ऊँच-नीच एवं छूआ-छूत की भावना।

- शब्दावली

तुर्क - मध्य एशिया व तुर्किस्तान के क्षेत्रों में रहने वाली जाति।

हिजरत - मुहम्मद साहब का मक्का छोड़कर मदीना जाना।

अभ्यास

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए-

   (क) इस्लाम धर्म के संस्थापक कौन थे ?

(ख) हजरत मोहम्मद के जन्म के समय अरब देश का जनजीवन कैसा था ?

(ग) अरबों तथा भारतीयों ने एक दूसरे से क्या-क्या सीखा ? सूची बनाइए।

(घ) महमूद गजनवी का भारत पर आक्रमण का क्या उद्देश्य था ?

(ङ) तुर्क आक्रमण के समय भारत की राजनैतिक दशा कैसी थी ?

(च) राजपूतों पर तुर्कों की विजय के क्या कारण थे ?

2. सही मिलान कीजिए-

तराइन का प्रथम युद्ध	1025 ई0
सिंध पर आक्रमण	622 ई0
सोमनाथ मंदिर पर आक्रमण	1191 ई0
हिजरी सम्वत् का प्रारम्भ	712 ई0

3. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए -

(क) तहकीक-ए-हिन्द पुस्तक के लेखक ..... हैं।

(ख) तराइन का युद्ध ..... और ..... के मध्य लड़ा गया।

(ग) महमूद गजनवी ने भारत पर ..... बार आक्रमण किया।

(घ) मुहम्मद गोरी को गुजरात में चालुक्य वंश के राजा .....ने पराजित किया।

प्रोजेक्ट वर्क-

निम्नलिखित तालिका में उल्लिखित स्थान वर्तमान में किस देश में है। शिक्षक की सहायता एवं आई0सी0टी0 का प्रयोग करते हुए खोज कर लिखिए -

स्थान	देश	राजधानी	भाषा
सिन्ध			
खीवा			
गजनी			
गोर			
मदीना			